

903 2, 21, 21, 21

ASHA ARCHIVES

3117

[illegible]

मन पायु ३ ॥ गीया ३३ लि ॥ दौ दौ दं या शाग वदी पद वं ग
द्वी ३३ कृ के ग या ला य याय ॥ वलि ॥ विन्दु वि य ॥ ३ ॥ दू ग
लिया ॥ ८ ॥ सु मा य रु द ॥ ८ ॥ मि मु का खान नम ॥ ८ ॥ टी त ऊ व
खान नम ॥ ८ ॥ मे ध मा खान नम ॥ ८ ॥ टी ना नि का खान नम ॥ ८ ॥ टी
क नि श्वा खान नम ॥ ८ ॥ क न ग ल द्वा खान नम ॥ ८ ॥ टी द द या य
नम ॥ ८ ॥ टी नि न म स्वा रु ॥ ८ ॥ मि स्वा य व व ट ॥ ८ ॥ क व चा य

क॥टीनगयायवोषट॥द॥अमायरुट॥असन॥गं
वाममयाय॥अंजलि॥निउटवैश्ववीशीयाय॥वलि॥विन्द
विय॥अथखालीषया॥द॥अमायरुट॥द॥अगुश्यानि
म॥द॥अगुनीन्यानिम॥द॥म॥मोल्यानिम॥द॥अना
मिका॥न्यानिम॥द॥क॥न॥न्यानिम॥द॥क॥न॥न॥न्या
न्यानिम॥द॥द॥द॥न्यानिम॥द॥अगिनसंखा॥द॥अगि

खायवषट॥द॥क॥वचायद॥द॥टीनगयायवोषट॥
द॥अमायरुट॥असन॥वाममयाय॥अंजलि॥न॥ह
रनिमायनायेन॥असंहरि॥अविकामहिनायायाय॥व
लि॥विन्दविय॥हिमया॥न्याम॥न॥द॥अमायरुट॥द॥
अ॥अ॥अ॥न्यानिम॥अ॥अ॥अ॥न्यानिम॥अ॥अ॥अ॥
म॥म॥म॥न्यानिम॥अ॥अ॥अ॥न्यानिम॥अ॥अ॥अ॥

निष्कार्या नमः॥ ने० अरु० कनकल वृक्षार्या नमः॥ ने० अरु०
दयाय नमः॥ ने० अरु० गिनम स्वाहा॥ ने० अरु० गिरवाथ ववट॥
ने० अरु० कवचाय नमः॥ ने० अरु० मणय्याय ववट॥ ने० अरु०
माय रूट॥ गिरालि॥ ने० अरु० ताम्रनाय सै० अयति गकि
सहिताय पायु०॥ बलि॥ विन्दु विय॥ ऊतल य॥ न्यास॥ दे०
प्रकाय रूट॥ का अरु० वृक्षार्या नमः॥ दे० तज्जनी न्यास

॥ दे० मभमा न्यास नमः॥ दे० अनामिका न्यास नमः॥ दे० कानि
वृक्षार्या नमः॥ दे० कनकल वृक्षार्या नमः॥ दे० अरु० दयाय
नमः॥ दे० गिनम स्वाहा॥ दे० गिरवाथ ववट॥ दे० कवचा
य नमः॥ दे० मणय्याय ववट॥ दे० प्रकाय रूट॥ न्यास न
॥ गिरालि॥ वखासन पायु०॥ मयुखासन पा
यु०॥ दे० अरु० वृक्षार्या नमः॥ दे० अरु० वृक्षार्या नमः॥ दे० अरु० वृक्षार्या नमः॥

लि॥३॥बलि॥विन्दविय॥धंथङ्कया॥न्यासा॥ने३॥मञ्जु
 मायारुद्र॥ने३॥मञ्जुगुह्य॥न्यानम॥ने३॥मञ्जुनीलान
 म॥ने३॥मञ्जुमायानम॥ने३॥मञ्जुनिकारानम
 ॥ने३॥मञ्जुनिराखानम॥ने३॥मञ्जुनिराखानम
 ॥मञ्जुदयायनम॥मिनिनसखारु॥३॥मिमायवैषट
 ॥मकवचायङ्क॥मिनिनसखारु॥मञ्जुमायारुद्र

[illegible]

सहृदयाय नमः॥ का की स गि न स स्वा हा ॥ का की स गि
स्वा ये व व टा ॥ का की स क व वा य कू ॥ का की स न ण ग या
य वा व ट ॥ का की स नू का य रु ट ॥ ॥ य न्ना स न या यू ज ॥
ने ग का की कू सु ॥ सु व न्न (ह) वि गु धा स न वि नि स्क्रि ना
ग्रा य ल गी क ना सु ॥ सु स न शी ला क धी ना य सूर्या य न

॥ ला उ का द या
म ४ या यू ज ॥ व व व लि ॥ ने ग कू कू द या दि न्या म ॥ व ग य व य
ता स न या यू ज ॥ ने ग कू कू कू शी लि खा स कू द र व वा य या यू ज
॥ ३ ॥ व लि ॥ नि गू न मू डा ॥ त यो ह ॥

१ गण ४ को मा वि यूजन विधि ॥ स्नानादि च यदन सिद्ध न दष्टि जजम यूष
अइवान कथेयताकाः यं च यता का सर्वे यहा न दायूडा कथ्या ७ ॥ ९
ॐ गुडादि ॥ जजमानस्य अस्मद् श्री श्री गिकाम नाथ महानवमी
या चैध्वी की मारी या गभर्जन कर्तुं श्री सूर्या च नमः ॥ पुन नमस्का
न ॥ अख ए म धु लो का लयादि ॥ न्यास ॥ जल पाय इ यूजा ॥ अर्घ

वा ययूजा ॥ रगसु द्वि ॥ आत्म यूजा ॥ माहनी रुय ॥ मालिनी य (शा
यं च वलि विरय ॥ निवलि ॥ नवात्मा यूजा ॥ कम यूजा ॥ मूरुखान यूजा
॥ ॥ वि (शेष न्यास ॥ त्रिश क अक्राय रुद्र यायूज ॥ त्रिश क अक्राय
र्यानमः ४ यायूज ॥ त्रिश क अक्राय र्यानमः ४ यायूज ॥ त्रिश क अक्राय
र्यानमः ४ यायूज ॥ त्रिश क अक्राय र्यानमः ४ यायूज ॥ त्रिश क अक्राय

[illegible]

दुःखीयं कामनाथ ॥ यथाऽपि का कुरु लयादि कामनाथ ॥ खड्ग सिद्धि
 या ॥ कामनाथ महासुमीयावर्धे वदस्व यो न प्रीतु प्रवक्ष्यामि दशैव न
 पूजा मयूखे निमलार्थे अरु गन्धयूष्यधूपदीप्य पूजनं दत्वा विभान
 गत्सर्व विधियविपुलं मम ॥ ॥ सम्यक्काय ॥ दवेदवीगय ॥ ॥

रतयोऽथ ॥ ॥ भास्व ॥ नै स्वाहाधीपनमयुनै तयोयां मि नमः ॥ नै स्वा
 हाधीपनमयुनै तयोयां मि नमः ॥ नै स्वाहाधीपनमयुनै तयोयां
 मि नमः ॥ ॥ नृगलस ॥ नै गङ्गा ॥ धीनवात्मनै तयोयां मि नमः ॥
 नै गङ्गा ॥ अक्षावी गतिकुमरा ॥ दानकाय तयोयां मि नमः ॥
 धी ३ ॥ मल्लनानि वद कि ॥ रदानकाय तयोयां मि नमः ॥
 नै ३ ॥ श्रीकृष्णकार्यतयोयां मि नमः ॥ यिवन ॥

अष्टाविंशतीकुमाक्षानमष्टाविंशतिमलुल ॥ नमस्तु चक्रवर्ति
न नमस्तु यत्र भूध्वज ॥ नमस्तु तेन वंदे व नमस्तु ह्यनदायक ॥ अष्टा
ष्टकैः उवदकानां यागिनिनां तथैव च ॥ द्रुग्यालश्रीदीनां गलप
सर्वकैकका कूलचक्रमिदं सर्वं भक्ताकालनुमामाह ॥ अम्पदादी
नां सगलपनिवानां श्री आयुना नाग्यमं ध्वजं जनधनलक्ष्मीसक्त
तिसक्तानां दिव्यद्वयं यथा करुलकामनार्थं समयचक्रं नमः ॥

पादुका ॥ ऐं नमः ४ श्रीनाथयति ॥ ३ ॥ विन्दुदत्त ॥ श्रीकान्तकृत्य ॥

१८ नमः शिवाय ॥ मा कर्तुं यमूनि धर्मः
धुयतां ममराधितं । दत्तीनामधार्तांतांः शृणुर्वकी शिकादितां ॥ अ
हंतव्यवक्रामि ॥ यदि त्वं यत्रियुक्तसि । महातं जावती दत्तीः ज
लाशु शक्तिरुयिती ॥ यः साधकय ॥ नित्यं ॥ लखतं वा श्रितरु
लं ॥ वक्रादी चतुकाय ॥ गेरीनावायली शिवा । वावाहीवा

सत्री इत्यः शूलिनी च महादत्ति । सा विगी च महाकाली ॥ काली
कायकया लिनी ॥ काल्यायली महादत्तीः कालवागी वसुध्वनी ॥
निवदूगी महातंताः विध्वन्या महाध्वनी । माहिनी च महात्रोदीः
रुडादी लुक्लिनी क्रमा ॥ उमा सारंगिनी गंगः ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ श्वरी ध
॥ ॥ कीमात्री ॥ कनीष्वरी ॥ सी यूवागी दत्ती ध्वनी । गायत्री च महा

मक्षः कामाख्या सर्वमाहिनी ॥ नखांसाकफनी यथाः कला
लीयकयदनी । वामधुआगिनी दवीः यखगिनागलध्वनी ॥ स
ख्याचविजयादवीः कृष्णवर्धुयराजिता । यमदूतीर्यगलाकी
रुद्रकाली सनध्वनी ॥ कीलागीनाकसीदेतीः यकनीजननीध्व
नी । वेतानीचसहस्राक्षीः जयनी दानया सिनी ॥ जयध्वरुन

वीसीताः मृजनी विम्बावा सिनी । यथावती विशालाकीः गाम्भ
नी वासिकावती । विद्रुयाकी महामायाः संसाविणी कूपध्वनी ॥
नागात्री नागिनी शुक्राः पीतवासायिना किनी ॥ त्रकात्री वमहा
धाराः जयमानकलध्वनी । सर्वसिद्धि विशालाकीः जयावस
र्वमदला ॥ रुवानी हावनी कोका ध्विघ्नाना कयका विधी ॥ न

तं नो मज्जातं स्फुटं यथय ॥ यद्यदि न दिन ॥ सर्वया यदु न त्रित्यं जिव
 लाकं गगनं नि । अथ माथ न व म्याथ ॥ यद्युद्धं विष्णु न गाय ॥
 द्वाय ॥ यद्वायिः सर्वकामरुल यदा । धनयूग रुव हृ द्वि ४ कामद
 माक्र भवच ॥ विवादि मनसा यथाः सकानं ल रुतं धृत्वं । वध
 न विग्रह याता मूय गं नाग सं गाय ॥ अथ कालय ॥ द्वायिः यि

नृमाक्र रुव धृत्वं । यद्वा काल विवाहचः यथय कि मनस्विन ॥ स्त्री
 धूलाय महासाध्या स्वयं पूरुष नागमं । दीर्घाय ॥ स्रुव त्रित्यं
 लाकानां यत्र मयि यथा न कालय ॥ यद्युद्धं गवाकाटि रुलं लरु ॥
 सगय रुलं यैवः लरुत नागं सय ॥ यथय ॥ सनतं स्फुटं
 दत्ती सं नाय कायया ॥ हृदय पायू या लीख्यः यत्र गेस्त्र ग्रसं गह ॥

निश्या माक्र (यद्युद्धं गगना म समार्क

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



